thearyasamaj.org

प्रकाशन की तिथि 01.06.2014

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

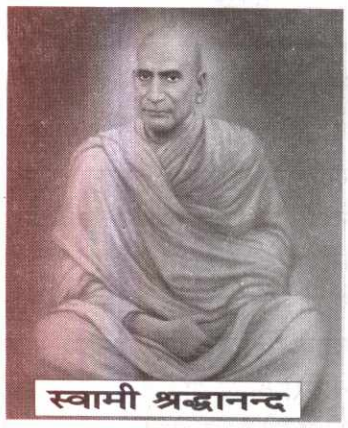

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 37 अंक 6

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

जून, 2014 विक्रम सम्वत् 2071 ज्यैष्ठ-आषाढ़

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

सत्यार्थ प्रकाश के कुछ उपयोगी अंश

– खुशहाल चन्द्र आर्य

डॉ. भवानी लाल जी भारतीय ने दयानन्द सूक्ति-मुक्तावली नामक पुस्तक लिखी है। इसको मैंने आदि से अन्त तक अच्छी प्रकार पढ़ा है। पुस्तक अति उत्तम है। मैं यह समझता हूँ कि भारतीय जी ने इस पुस्तक को लिख कर केवल आर्य समाजियों का ही नहीं बल्कि पूरे मानव समाज का उपकार किया है। इसमें भारतीय जी ने महर्षि दयानन्द कृत लगभग सभी ग्रन्थों का सार संक्षिप्त में लिखा है। साथ ही इस ग्रन्थ की उत्तमता इसलिए और अधिक बढ़ जाती है कि इसमें पुस्तकों के अतिरिक्त पूना में दिये पन्द्रह प्रवचन, मुम्बई प्रवचन तथा कुछ शस्त्रार्थों का भी वर्णन है जिससे पुस्तक रोचक बन गई है। मैंने इस लेख में सत्यार्थप्रकाश के कुछ उपयोगी अंशों का उल्लेख किया है, कृपया पाठकगण इनसे लाभ उठावें।

1. आत्मा का स्वभाव – मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

2. महर्षि की प्रतिज्ञा – यद्यपि मैं आर्यावर्त में उत्पन्न हुआ हूँ और वसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथार्थ प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा अन्य मतों वालों के साथ भी बर्तता हूँ। जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी। मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती हो तो आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध (रोक, अवरोध) करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन के बाहर हैं।

3. सर्वशक्तिमान का अर्थ– सर्वशक्तिमान, शब्द का यही अर्थ है कि ईश्वर अपने काम अर्थात् पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पुण्य, पाप की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित भी किसी की सहायता नहीं लेता।

4. प्रार्थना और पुरुषार्थ – जो मनुष्य जिस बात के लिए प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही प्रयत्न करना चाहिए। अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करे तब उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अपने पुरुषार्थ के बाद यदि वह वस्तु नहीं मिलती है तब ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए।

5. यदा यदा हि धर्मस्य का अर्थ – श्री कृष्ण धर्मात्मा लोगों की और धर्म की रक्षा करना चाहते थे, कि मैं युग-युग में जन्म लेकर श्रेष्ठों की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ। क्योंकि 'परोपकाराय सतांविभूतयः परोपकार के लिए सन्तपुरुषों का तन,मन, धन होता है। तथापि इससे श्रीकृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते।

6. आर्य ही, आर्या वर्त के मूल निवासी हैं – किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में कहीं नहीं लिखा है कि आर्य लोग ईरान से या मध्य एशिया से आये और यहां के जंगली लोगों से लड़कर, विजय प्राप्त करके इस देश के राजा हुए। आर्यो के आने से पहले इस देश का नाम क्या था, कोई नहीं बतला सकता तब विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है।

7. स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि होता है – कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वही सर्वोपरि व उत्तम होता है। विदेशियों का राज्य, चाहे कितना भी पक्षपात् शून्य, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा न्याय और दया रखने वाला हो, तब भी पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।

8. जन्म और मरण क्या है – जब शरीर से जीव निकलता है, उसी का नाम मृत्यु और शरीर के साथ संयोग होने का नाम जन्म है। जब जीव, शरीर छोड़ कर कुछ समय के लिए यमालय अर्थात् आकाशस्थ वायु में रहता है, तत्पश्चात ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार जीव, माता के गर्भ में जाता है। यम नाम वायु का है। गरूड़ पुराण का कल्पित यम नहीं है।

9. स्वर्ग और नरक क्या है – सुख, विशेष का नाम स्वर्ग और विषय, तृष्णा में फंसकर दुःख विशेष पाने का नाम नरक कहलाता है। जो संसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो योग-साधना तथा अच्छे कर्मों द्वारा जो परमेश्वर की प्राप्ति से आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग या मोक्ष कहलाता है।

10. हमारी पराधीनता के कारण – विदेशियों का आर्यावर्त्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, जन्म से जाति यानि वर्ण मानना, कर्म से नहीं बाल्यावास्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेद विद्या का प्रचार में न होना आदि हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

11. गोवध से हानि – जब आर्यों का राज्य था, तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। तभी आर्यावर्त्त वा अन्य भूगोल के देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी बर्तते थे। जबसे विदेशी, मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।

12. मनुष्य कौन होता है – मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने पूर्ण सामर्थ्य से धर्मात्माओं की, चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हो, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे, चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहां तक अन्याय-कारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे कितना भी दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवें।

13. वैदिक धर्म सबसे प्राचीन – यह सिद्ध बात है कि पाँच सहस्त्र वर्षों के पूर्व वैदिक धर्म से भिन्न दूसरा कोई भी धर्म न था। क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या अविरूद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। वेदों की अप्रवृत्ति से अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रम-युक्त होकर, जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। जिससे मानव-मात्र की बड़ी हानि हुई।

14. वेदोक्त धर्म से मानवता का हित – महाभारत से पूर्व सर्व भूगोल में एक ही वेदोक्त धर्म था। उसी में सब की निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख – दुःख, हानि-लाभ आपस में अपने समान समझते थे। तभी भूगोल में सुख था। अब तो बहुत से मत वाले होने से बहुत दुःख और विरोध बढ़ गया है। इसका निवारण करना बुद्धिमानों का काम है।

15. आर्यों के पतन का कारण – स्वयंभुव राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़कर नष्ट हो गये। क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी अविद्वान, लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन संचय प्रयोजन से अधिक हो जाता है, तब आलस्य, पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या-द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इससे देश में विद्या-सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्टव्यसन बढ़ जाते हैं।

16. महाभारत से हानि – जब बड़े-बड़े विद्वान, राजा-महाराजा, ऋषि-महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से तो मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वैदिक धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। ईष्या, द्वेष अभिमान आपस में करने लगे। जो बलवान हुआ वह देश को दाब कर राजा बन बैठा। इस प्रकार सर्वत्र आर्यावर्त देश खण्ड-खण्ड राज्यों में बंट गया।

17. सार्वभौम मानवीय एकता कैसे हो – जब तक इस मनुष्य जाति में मिथ्या मतमतान्तरों का होना नहीं छूटेगा, तब तक लोगों को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह वैदिक धर्म के मानने से ही सम्भव है।

–गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स,
180 महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त बिचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

"वीर हकीकत का बलिदान"

–विद्यावाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

काल लौटकर फिर नहीं आता– इसलिए चिरनिद्रा में मत सोओ। अपनी वीरता के गत इतिहास को दोहराओ। हमारे पूर्वज, हमारे इतिहास पुरुष, हमारे रण बांकुरे, हमारे वीर हकीकत जैसे धर्मध्वजी बालक, प्रताप जैसे प्रणवीर, शिवा जैसे शौर्यशाली, छत्रपाल से क्षत्रिय, गुरु गोबिन्द जैसे गुरु, बन्दा बैरागी जैसे वीरों की गाथाएं, नलवा की सी बहादुरी आपके कानों में बराबर डाली जाती रही हैं। फिर भी आप गुलामी की सी मांद में दुःखी से बैठे हैं। आपका तो मुलायम ही आपको मुस्लिम धुन में धुन रहा है, जौहर विश्वविद्यालय का निर्माण कर दूसरे पाकिस्तान की नींव रख रहा है।

यह मेरठ जनपद स्वतंत्रता संग्राम की वीर सैनिक भूमि है, जहां से महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजादी दिलाने वाले 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का नारा दिया था। घर–घर, नगर–नगर, गांव–गांव, डगर–डगर स्वतंत्रता के बीज का आरोपण कर, इसी क्रांतिकारी नगर के बुढाना गेट की पावमानी ज़मी को वेदमंत्रों से पुष्पित कर आर्य समाज की स्थापना से अंग्रेजों को ललकारा था। जाओ विदेशी जाओ, यह वीरभूमि मेरठ है, जहां के आश्रमों में भरत का जन्म हुआ था। यही वह गंगा यमुना का दोआबा मय राष्ट्र है। जिसके गर्भ से उत्पन्न वीर, वनराज सिंहों से खेलते थे। यहां के आर्यों में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा का स्थान नहीं है। परीक्षित का किला, कुरुवंश की महानगरी हस्तिनापुर, महारानी शकुन्तला का पालक महर्षि कण्वाश्रम, शिल्प नगरी बरनावा का लाक्षागृह, युधिष्ठिर का महाभिषेक इन्द्रप्रस्थ, इसी मेरठ नगरी की चारों दिशाओं को प्रकाशित कर रहे हैं। महात्मा देवतास्वरूप विदुर सदा इसकी रक्षा करता रहा है।

परन्तु आज के आधुनिक युग में ईरान–इराक फिलिस्तीन–मिश्र और अरब आदि देशों में गैर मुस्लिम को मुसलमान की भांति समान नागरिक नहीं माना जाता है, और न उसे मुसलमान की भांति अधिकार प्राप्त हैं। भारत से विभाजित पाकिस्तान में भी मुसलामानों के अतिरिक्त दूसरे धर्म के नागरिकों को दूसरी श्रेणी का नागरिक माना जाता है और उन्हें तंग किया जाता है।

हकीकत राय के साथ जो दुर्घटना हुई है उसका सम्बन्ध इस्लामी राज्य की इसी वस्तुस्थिति से है। हकीकत राय की हत्या का सारा दोष हम उस समय भारत में रहने वाले उन करोड़ों हिन्दुओं को देते हैं जो अपने धर्म पर अटूट आस्था रखने वाले एक हिन्दू बालक की रक्षा करने के लिये आगे नहीं आये बल्कि रक्षा करने में सर्वथा असमर्थ रहें । कितना भारी आश्चर्य का विषय है कि कोटि–कोटि हिन्दुओं पर कुछ सहस्र क्रूर मुस्लिम राज्य करते रहे।

हकीकत राय के जिस बलिदान की चर्चा हम कर रहे हैं उसका सारा दोष और पूर्ण उत्तरदायित्व केवल उन क्रूर स्वभावी मुसलमानों पर ही नहीं डाला जा सकता। इतिहासकारों की दृष्टि में मुस्लिमों से अधिक दोषी और उत्तरदायी भारत की वीर हिन्दू जनता दोषी है।

वीर हकीकत राय के बलिदान की यह घटना उस समय के पश्चिमी पंजाब के सियालकोट नगर की है– उस समय वहां के हिन्दू नागरिकों की संख्या वहां पर विद्यमान मुसलमानों से कहीं अधिक थी। वे सब रोते रहे, शोक मनाते रहे, पर उनकी आंखों के सामने जो अत्याचार और अन्याय हुआ, उसके प्रतिकार में वहां की हिन्दू जनता तैयार नहीं हो सकी–जैसे मो. बिन कासिम के सिंध पर आक्रमण के समय अहिंसा के उपासक बौद्ध और जैनी आततायी सैनिकों को अहिंसा और शान्ति का पाठ पढ़ाने में सर्वथा असफल सिद्ध हुए और इस्लाम के दास बन गये।

समय के प्रभाव से भागमल व्यापारी के बुद्धिमान हकीकत को मुल्ला के मकतब में प्रवेश पाने हेतु मजबूर होना पड़ा। इसके अलावा उस समय तक हिंदू समाज में बौद्ध और जैनियों द्वारा प्रचारित अहिंसा की समाविष्ट भ्रान्त कल्पना भी वीर बालक हकीकत की हत्या का बचाव नहीं कर सकी।

इस समय हिन्दू सम्माज की आस्था वेदादि धर्मशास्त्रों से हटकर कपोल कल्पित पुराणों पर टिक गई थी। पुराणों की शिक्षा का सबसे बड़ा दोष यह भी है कि उनसे जनता को अपने अधिकारों की प्रेरणा नहीं मिलती। वहां एक ओर यह गलत धारणा जनता में फैला दी गयी थी कि "आततायी को दण्ड देने के लिए समय–समय पर भगवान अवतार लेता रहा है।" जनता मंदिरों में घंटों घंटों बैठकर घण्टे घड़ियाल बजाकर परमात्मा से सहायता के लिये प्रार्थना करती रहती थी। इससे पुराण पन्थियों की दुर्नीति पर आततायी उनके बच्चों पर, महिलाओं पर अत्याचार करते रहते थे। सियालकोट में वीर हकीकत की हत्याकांड में यह भी प्रमुख कारण रहा।

हिन्दू समाज धर्म के सार को भूल गया था। इस कारण इसके साथ दुर्घटनाएं होती रही हैं। जून 2013 से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आज जनवरी–फरवरी 2014 तक मुलायम ने मुस्लिम वोट के लिए हिन्दू जाति को नष्ट कराने के लिए किन अत्याचारों का इस्तेमाल नहीं किया?क्योंकि भारत में हिन्दुओं का कोई धर्म नहीं है, सब अपने आपको धर्मनिरपेक्ष के जाल में फंसा पाते हैं। परन्तु धन्यवाद का पात्र है भागमल व्यापारी का पुत्र हकीकत जिसने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। सियालकोट के मकतब में पढ़ने वाले सभी बालकों से उसकी बुद्धि प्रखर थी। मकतब का मुल्ला भी उसे पाकर बेहद खुश हुआ था। हकीकत की तीव्र बुद्धि से मुस्लिम सभी बालक उससे ईर्ष्या रखते थे। उससे लड़ते थे। मुल्ला को आये दिन शिकायत लगाकर उसे पिटवाना चाहते थे। मकतब में छुट्टी के समय भी वह अपना कार्य करता रहता था। खेल के समय बालक उसे खींचकर मैदान में ले जाना चाहते थे। उसे दुर्गाभवानी की गाली भी देते थे। उसकी पिटाई भी करते रहते थे। मुल्ला से शिकायत लगाते कि इसने तो मो. पैगम्बर की लड़की को गाली दी है– आप इसे सजा नहीं दोगे तो हम इसकी शिकायत नगर के काजी से करेंगे, यह सुन मुल्ला भी डर गया। नगर काजी ने लड़कों की बात सुनकर निर्णय दिया कि गाली देने के अपराध में किसी को कोई दण्ड का विधान नहीं है। मूर्ख मुस्लिम नगर के काजी से भी संतुष्ट नहीं हुए और इसके विरोध में उलेमाओं ने फतवा दे दिया कि हकीकत को तुरंत कल्त कर दिया जावे। इसके बाद सियालकोट के हाकिम ने कहा–बच्चों के झगड़े को इतना तूल नहीं दिया जाना चाहिए। काजी ने कहा– यदि वीर हकीकत नामक यह बालक मुस्लिम धर्म स्वीकार कर ले तो इसका अपराध क्षमा योग्य माना जा सकता है।

यह केस लाहौर लाया गया, वहां के हाकिम ने कहा "तुम मुसलमान क्यों नहीं हो जाते"?वीर हकीकत बुद्धिमान था – उत्तर दिया– जिस अपराध में मुझे दण्ड दिया जा रहा है, मेरे मकतब में पढ़ने वाले सभी मुस्लिम बच्चों ने मेरी आराध्या देवी दुर्गा भवानी' को पहले गाली देकर भारी अपराध किया था, मुझसे पहले यह दण्ड मुस्लिम बच्चों को भी दिया जाना चाहिए। यह सुनकर लाहौर का हाकिम धर्मवीर वीर हकीकत राय का मुख देखता रह गया, और कहा–लड़का दण्डनीय हो सकता है, किन्तु इसका दण्ड मृत्यु ही है यह तो शरा में नहीं लिखा। अंधे अनाड़ी मुसलमानों ने लाहौर हाकिम के विरोध में नारे लगाना शुरू कर दिया और कहा हम यह मामला दिल्ली दरबार ले जायेंगे।

लाहौर हाकिम ने वीर हकीकत को समझाया–भैया तू मुसलमान ही हो जा, बाद में फिर हिन्दू बन जाना। अभी मृत्यु से बच जा। अनेक लोभ लालच दिये जाने के बावजूद वीर हकीकत राय ने विचारा। सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अन्तर्यामी, भगवान ने जहां भेजा है– वहीं रहूँगा। जगत रचने वाले ईश्वर के विरूद्ध सोचना भी पाप है। "नहीं नहीं नहीं.....मैं मण्डी का मोल बिकाऊ धन नहीं हूँ। इसप्रकार सियालकोट के व्यापारी लाला भगमल के आर्य पुत्र ने सर्वशक्तिमान परमात्मा का गहरा स्मरण किया और विचारा कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान करना ही श्रेयस्कर है।

इस तरह इस्लाम के क्रूर मज़हबी अत्याचार से निरपराध सप्तवर्षीय अल्पायु धर्मवीर हकीकत राय को लाहौर नगर से 3 किमी. दूर रावी नदी के तट पर तलवार से कत्ल कर दिया गया।.... वहां करोड़ों–करोड़ हिन्दू नपुंसकों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा। यह दिन बसन्त पंचमी का था। उसी जगह वीर हकीकत की बलिदान समाधि का निर्माण हुआ था। पाकिस्तान ने उस बलिदानी का स्मृति चिन्ह को मिटा दिया। भारत के धर्मनिरपेक्ष नपुंसक नेता राम मंदिर को बाबरी मस्जिद बनवाने में लगे हुए हैं। डा. गोकुल चन्द्र नारंग के शब्दों में

अगर हिन्दुओं में है कुछ जान बाकी,
शहीदों बुजुर्गों की है पहचान बाकी
शहादत हकीकत की मत भूल जाना, श्रद्धा सुमन उस पर भी चढ़ाना।।

–(साभार आर्य मित्र)

thearyasamaj.org

एक युग : एक पुरुष

– डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

17 सितम्बर 1950 को मेहसाणा जिले के बडनगर कस्बे में एक निर्धन परिवार में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। जिसने बडनगर रेल्वे स्टेशन पर चाय बेचकर जीविकोपार्जन प्रारम्भ किया। जिसके जीवन की शुरुआत ही संघर्ष से हुई जो आर.एस.एस. का प्रचारक बना। परिव्राजक के रूप में देशाटन किया। पश्चात् राजनीति में आकर गुजरात का मुख्यमन्त्री बना एवं गुजरात को विश्वपटल पर स्थापित कर दिया। आज वह व्यक्ति देश के प्रधानमन्त्री पद पर सुशोभित है। और उसका परिचय है भारतभाग्य विधाता, देश के सर्वाधिक लोकप्रिय जननेता माननीय नरेन्द्रभाई जी मोदी। आज भारत की पहचान नरेन्द्र मोदी से हो रही है। मोदी जी को देखकर एक पुरानी उक्ति याद आती है –

सुशीलो मातृपुण्येन पितृपुण्येन बुद्धिमान्।
यशस्वी वंशपुण्येन आत्मपुण्येन भाग्यवान्।।

माननीय नरेन्द्र भाई माँ के पुण्य से सुशील, पिता के पुण्य से बुद्धिमान्, वंश के पुण्य से यशस्वी एवं स्वयं के पुण्य से बहुत ही भाग्यवान् हैं। मोदी जी का व्यक्तिगत जीवन बहुत ही सरल, सहज और निश्छल है। मोदी जी एक पवित्रात्मा दिव्य पुरुष हैं। भारत की आजादी के 65 साल के इतिहास में जितने राजनैतिक आक्रमण मोदी जी पर हुए उतने किसी पर भी नहीं हुए। उस व्यक्ति पर परमात्मा की बहुत बड़ी कृपा है एवं वह व्यक्ति एक राष्ट्र सन्त है। यदि उनकी आत्मा में विशालता, निर्मलता न होती तो यह ऐतिहासिक विजय कदापि संभव नहीं था। एक बार चुनाव जीतने के बाद उन्होंने टिप्पणी की थी "मैं सात अक्टूबर 2001 को गुजरात का मुख्यमंत्री नहीं बना मैं तो शुरु से 'सीएम' हूँ। आज भी 'सीएम' हूँ और कल भी रहूँगा। क्यों कि सीएम से मेरा मतलब 'कॉमन मैन' यानी साधारण व्यक्ति। नरेन्द्र मोदी भारत के गौरव हैं। आज की युवापीढ़ी के लिए मोदी प्रेरणास्तम्भ हैं जो जागृति मोदी ने बच्चों से लेकर बृद्धों तक जगाई उसकी मिसाल सदियों में देखने को मिलती है।

नरेन्द्र भाई केवल मात्र प्रधानमन्त्री ही नहीं हैं अपितु एक बेहतर इन्सान हैं। क्या किसी को पता था कि जो आज किसी को चाय पिला रहा है कल वही देश का नेतृत्व करेगा। इस व्यक्ति के हृदय में कितनी तड़प, लगन, निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता रही होगी कि जिसने महादानी कर्ण के सिद्धान्त को अपनाया – दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरूषम् अर्थात् किसी भी घर परिवार में जन्म लेना दैव के हाथ में है किन्तु मेरे हाथ में तो पौरुष हैं कर्म है। नरेन्द्र भाई ने दीन दुःखियों की सेवा करके एक सच्चे सैनिक की तरह जीवन का सफर मंजिल तक तय किया है। मोदी जी तो कर्मयोगी हैं। वेद में लिखा है कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इसका ज्वलन्त उदाहरण नरेन्द्र भाई हैं जिन्होंने पिछले दिनों कहा था – मैं तो मजदूर नम्बर वन हूँ। उनकी एक प्रतिज्ञा अर्जुन की तरह है – न दैन्यं न पलायनम् अर्थात् जीवन में कभी दीनता नहीं लाऊँगा और न ही कर्त्तव्य से पलायन करूंगा।

नरेन्द्र मोदी जी ने देश को एक मन्त्र दिया है वह मन्त्र है नमो मन्त्र अर्थात् विकास। देश की जनता ने नमो मन्त्र का केवल उच्चारण किया तो इतनी बड़ी जीत मिल गई यदि इस मन्त्र का सभी आचरण करने लग जायें तो ये धरती बदल जायेगी। नरेन्द्र मोदी एवं विकास ये दोनों शब्द पर्यायवाची बन चुके हैं। अतः आज विकास के लिए सभी देशवासियों को नरेन्द्र मोदी बनना पड़ेगा। मोदी जी देश भक्त, वेद भक्त, गौभक्त, संस्कृति रक्षक एवं तपस्वी व्यक्ति हैं। इतना तपस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी एवं यशस्वी तो इस देश के साधु सन्त भी नहीं हैं।

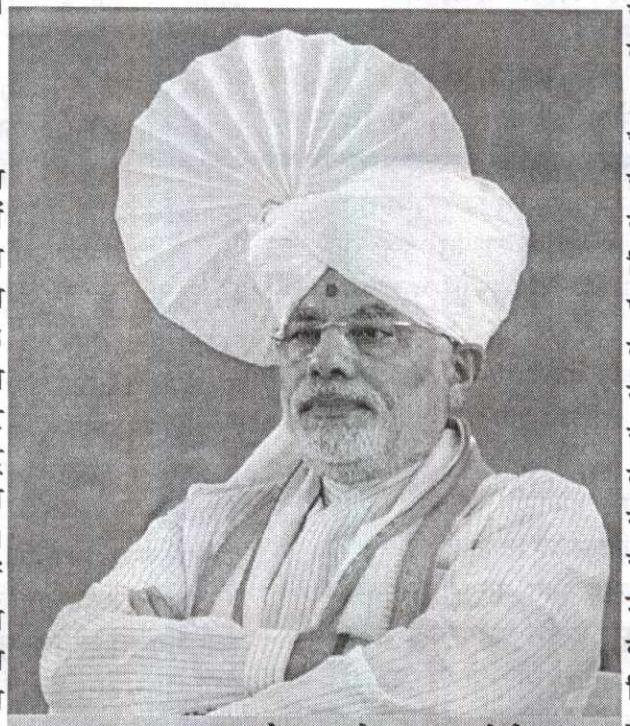

दूरद्रष्टा नरेन्द्र दामोदर दास मोदी

एक छोटी सी बात पाठकों को बताना चाहूँगा। जब 1930 में क्रान्तिकारी शिरोमणि, इण्डिया हाऊस के संस्थापक स्वामी दयानन्द के मानस पुत्र श्याम जी कृष्ण वर्मा का जेनेवा स्विट्जरलैंण्ड में देहान्त हुआ तो देहान्त से पहले उनकी वसीयतनामा थी कि मेरे मरने के बाद जब भारत स्वतन्त्र हो जाये तब स्वतन्त्र भारत में मेरी अस्थि कलश को ले जाकर रख देना। 1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि किसी भी नेता या संस्था को उस नरकेसरी की याद नहीं आई। जब मोदी जी गुजरात के मुख्यमन्त्री बने एवं उन्हें पता चला कि एक महापुरुष की कोई वसीयतनामा भी है तो वे मुख्यमन्त्री रहते हुए स्विट्जरलैंण्ड गये एवं वहाँ से श्याम जी कृष्ण वर्मा की अस्थि कलश लेकर के आये पूरे गुजरात के गांव गांव में उस यशःकाय **क्रान्तिकारी की अस्थि कलश यात्रा निकाली एवं उनकी जन्म भूमि माण्डवी (कच्छ) में एक भव्य विश्वदर्शनीय स्मारक बना दिया। क्या भारत के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति मिलेगा। आजाद भारत में यही तो एक नरकेसरी पैदा हुआ है। धन्य है यह भारतवर्ष, धन्य है इस देश की माटी, धन्य हैं माता–पिता जिनकी कोख से इस महापुरुष का जन्म हुआ है। 21वीं सदी के इस महामानव को शत्–शत् प्रणाम। परमात्मा नरेन्द्र भाई को शक्ति, भक्ति, सन्मति, सौमनस्य एवं शिवसंकल्प प्रदान करें।**

बाल शिक्षा

– डा0 जगदीश गांधी, प्रसिद्ध संस्थापक–प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

(१) विद्यालय है सब धर्मों का एक ही तीरथ-धाम :-

विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ सभी धर्मों के बच्चे तथा सभी धर्मों के टीचर्स एक स्थान पर एक साथ मिलकर एक प्रभु की प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना का यह ही सही तरीका है। क्योंकि सारी सृष्टि को बनाने वाला और संसार के सभी प्राणियों को जन्म देने वाला परमात्मा एक ही है। अतः परिवार तथा समाज में भी स्कूल की तरह ही सभी लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ मिलकर एक प्रभु की प्रार्थना करें तो सबमें धार्मिक एकता तथा आपसी प्रेम भाव भी बढ़ जायेगा और संसार में सुख, एकता, शान्ति, न्याय एवं अभूतपूर्व समृद्धि आ जायेगी।

(२) बच्चे सचमुच ही पवित्र मन के देव समान प्राणी होते हैं :-

संसार में विद्यालय के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा तीरथ और धाम नहीं है, जहाँ बच्चों जैसी पवित्रता के दर्शन होते हों। बच्चे सचमुच ही पवित्र मन के देव समान प्राणी होते हैं। टीचर्स इस शिक्षा मंदिर रूपी क्लास रूम के पुजारी होते हैं जो धरती पर आध्यात्मिक सभ्यता स्थापित करने में सहायक होते हैं।

(३) क्लास रूम हमारा शिक्षा का मंदिर है तथा विद्यालय सभी धर्मों का एक ही तीरथ धाम है :-

हम टीचर्स संसार के सबसे अधिक भाग्यशाली व्यक्ति हैं जिन्हें रोजाना अपनी कक्षा रूपी शिक्षा मंदिर में परमात्मा के अवतारों जैसे पवित्र हृदय से लवालब बच्चों के दर्शन होते हैं। वास्तव में क्लास रूम शिक्षा का मंदिर है तथा विद्यालय हमारे लिए संसार के सभी धर्मों का एक ही सबसे पवित्र तीरथ और धाम है।

(४) एक पूर्ण गुणात्मक व्यक्ति ही पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धक बन सकता है :-

हमारे मार्गदर्शन एवं कल्याण के लिए परमपिता परमात्मा हमें दिव्य ज्ञान दिये हैं। अतः परमात्मा द्वारा भेजे गये ये दिव्य ज्ञान हमें बच्चों को गहराई से समझने एवं उन पर चलने के लिए प्रेरित करना है ताकि वे पूर्ण गुणात्मक व्यक्ति बन सकें। एक पूर्ण गुणात्मक व्यक्ति ही पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धक बन सकता है, जो कि पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धन करने के काबिल हो। एक पूर्ण गुणात्मक प्रबन्धक ही परिवार का अच्छा मुखिया, व्यवसाय या कारखाने का अच्छा प्रबन्धक, विश्व का एक अच्छा नेता व प्रशासक बन सकता है। साथ ही विस्तृत एवं प्रभावशाली शिक्षा पद्धति का उद्देश्य बच्चों को विश्वस्तरीय कैरियर या व्यवसाय अपनाने व प्रतिष्ठित ऐसे पद ग्रहण करने हेतु तैयार करना है जहां वे जनहित एवं विश्व कल्याण के बड़े निर्णय ले सकें।

(५) आधुनिक विद्यालय का सामाजिक उत्तरदायित्व :-

आधुनिक जागरूक विद्यालय का सामाजिक उत्तरदायित्व है कि वह सुन्दर, स्वस्थ, समृद्ध, आनन्दित एवं सशक्त समाज के निर्माण के लिये समाज के प्रकाश का केन्द्र बने और अपने छात्रों को बचपन से ही (१) उद्देश्यपूर्ण भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्ञान की संतुलित शिक्षा दे, (२) धर्म के वास्तविक उद्देश्य अर्थात एकता के महत्व से परिचित कराये तथा (३) कानून और न्याय पर चलने के सम्बन्धित मौलिक सिद्धान्तों का बचपन से ही छात्रों को ज्ञान कराये तथा उन पर चलने का अभ्यास कराये।

(६) कानून और न्याय के मूल सिद्धांतों का ज्ञान बालकों को बाल्यावस्था से ही कराना चाहिए :-

बालकों को कानून और न्याय के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान बचपन से ही कराना और उन पर चलने की शिक्षा देना तथा उनके पालन करने का अभ्यास कराना एक जागरूक विद्यालय का अनिवार्य कर्त्तव्य है। ताकि समाज में जो आज अति तीव्रता से अन्यायपूर्ण, अपराधपूर्ण तथा हृदयहीन शैतानी सभ्यता बढ़ती जा रही है उसे रोका जा सके और उसके स्थान पर आध्यात्मिक सभ्यता स्थापित हो सके।

thearyasamaj.org

संसार में मानव-जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए?

– आचार्य भगवान देव

इस संसार में देखने में आता है कि नाना प्रकार के जीव-जन्तु, पशु-पक्षी इस पृथिवी पर विचरण कर रहे हैं। जीवन जी रहे हैं। सुनते हैं कि सृष्टि में असँख्य योनियों में जीव अपने अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। लेकिन इन जीवों में पशु, पक्षी, कीट-पतंग असंख्य प्राणियों को अपने जीवन का क्या लक्ष्य है? यह ज्ञान नहीं है। पशुओं, पक्षियों असंख्य जीव-जन्तुओं में मानव-जीवन ही सर्व श्रेष्ठ है। मनुष्य-जीवन बड़े ही पुण्य कर्मों के फलस्वरूप प्राप्त होता है। वेद में कई स्थानों पर मानव-जीवन को लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ने का संकेत किया है उदाहरण के रूप में मन्त्र प्रस्तुत है-

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुम् अनुइहि
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्वणं वयतः जोगुवाम् अपो
मनुर्भव जनया दैव्य जनम्।।

-ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 53 मन्त्र 6

मन्त्र द्वारा परमेश्वर ने संसार के मनुष्यों को जो उपदेश दिया है वह संसार के किसी भी धर्म ग्रन्थ में प्राप्त नहीं होता। चाहें वह बाइबिल हो, कुरानशरीफ हो, गुरु ग्रन्थ साहिब हो अथवा अन्य सम्प्रदाय का कोई धर्म ग्रन्थ हो। यहाँ मनुष्य को पाँच उद्देश्यों की ओर चलने का संकेत किया गया है जिससे मानव-जीवन के अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।

1– मनुष्य का पहला कर्त्तव्य –
ज्ञान प्राप्त करना

(रजसः) संसार के (तन्तुम्) ताना-बाना बुनाते हुए अथवा क्रियाकलापों को पूरा करते हुए (तन्वन्) विस्तृत करते हुए अथवा पूर्ण करते हुए (भानुम् अनुइहि) प्रकाश का अथवा ज्ञान का अनुसरण करें।

यहाँ पर मन्त्र के पहले भाग में ज्ञान-प्राप्ति पर बल दिया गया है। ज्ञान बिना विद्या की प्राप्ति नहीं होती। विद्या से रहित व्यक्ति पशु के समान माना गया है।

सन्त तुलसीदास जी के शब्दों में –

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।
पाई न जेहि परलोक सँवारा।।

अर्थात् मानव-जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष-प्राप्ति है और मानव-शरीर मोक्ष-प्राप्ति का द्वार है। शरीर को ठीक रखने के साथ-साथ परलोक-सुधार का भी ध्यान रखने की आवश्यकता है। लेकिन लक्ष्य-प्राप्ति बिना ज्ञान-प्राप्ति के असम्भव है।

मानव-शरीर की अनेक विशेषतायें हैं-

1- संसार में बहुत से अमूल्य पदार्थ हैं उनमें से मानव-जीवन सबसे उत्कृष्ट है। यह नरतन जीवात्मा के रहने का मकान है।

2- यह मानव-जीवन प्रभु की अनमोल देन है। ईश्वरीय रचना का अद्भुत नमूना है। महाभारत में भी कहा गया है- "न हि मनुष्यात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्" अर्थात् इस सृष्टि में मानव से बढ़कर और कुछ श्रेष्ठ नहीं है।

3- यह मानव-शरीर प्रभु का मन्दिर और देवों की नगरी है।

4- यह शरीर ही परमेश्वर तक पहुँचाने वाली सीढ़ी है। सन्त तुलसीदास जी के शब्दों में –

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थहि गावा।।

अनेक योनियों में भटकने और चक्कर काटने के बाद यह मानव-शरीर मिला है। जिन्हे मानव शरीर मिला है वे बड़े ही भाग्यशाली हैं और इससे भी अधिक भाग्यशाली वे हैं जिन्हे वेदादि शास्त्र, रामायण, महाभारत, उपनिषद्, सत्यार्थप्रकाश जैसे सद्ग्रन्थों को पढ़ने और सुनने का अवसर मिला है।

5 - संसार में केवल मनुष्य का सिर ही ऊपर की ओर है जबकि संसार के अन्य सभी जीव-जन्तुओं के सिर नीचे की ओर हैं। पाप रूप कर्मों के कारण सिर झुका होता है। शुभ-कर्मों को करने वाले मानव-प्राणी का सिर गर्व से ऊपर होता है।

6- ज्ञान-प्राप्त करने के कारण ही मनुष्य को संसार में सर्वश्रेष्ठ प्राणी का गौरव प्राप्त है।

7- सृष्टि-जगत् में मनुष्य परमात्मा का प्रतिनिधि कहलाता है। इसी लिये परमेश्वर अपने अधिकतर कार्य इन्सान के द्वारा ही करवाता है।

8- इसी शरीर से ही तो अपने अन्तिम जीवन-लक्ष्य 'मोक्ष' को प्राप्त करना है। इसलिए मानव-जीवन दुर्लभ है। इसी में जीवन की वास्तविकता का पता चलता है।

9- अन्य योनियाँ तो केवल भोग योनियाँ हैं, इसमें भोग तथा कर्म दोनों हैं। यह मानव-योनि आत्मज्ञानी होकर, परमात्मा को पाकर, जीवन से मुक्त होने के लिए मिली है।

10- कुकर्मों के कारण ईश्वर जीव को निकृष्ट योनियों में जैसे कुत्ता, शूकर, मक्खी, मच्छर, कीड़े आदि में भेजता है इससे वह कर्म-फल के दुःखों, कष्टों और अभाव आदि का दुःख भोगकर हल्का हो जाता है उसके पश्चात् पुनः मनुष्य जन्म पाने का अधिकारी बन जाता है।

अतः हमें इस जन्म को पाप्त करने के पश्चात् 'देवत्व' की ओर बढ़ना है। पतन की ओर नहीं जाना है। वेद की प्रेरणा भी यही है – "उद्यानं ते पुरुषं नावयानम्"

2– मनुष्य का दूसरा कर्त्तव्य क्या होना चाहिए?
(ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्)

अर्थात् बुद्धिमानी से इस मानव ने प्रकाशयुक्त जीवन-मुक्त होने के जो मार्ग या साधन बनायें हैं उनकी रक्षा करनी चाहिए।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मुगल काल में विदेशी हमलावरों ने नालन्दा, उदन्तापुरी विश्वविद्यालयों के बड़े-बड़े पुस्तकालय, दुर्लभ ज्ञान के ग्रन्थ फूंक डाले थे। हम उनकी रक्षा नहीं कर पाये थे।

एक समय ऐसा भी आया जिसमें आदि शंकराचार्य, आचार्य चाणक्य, राजा राम मोहनराय, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पं. लेखराम, आदि महान पुरुषों ने अनेक प्रकार के समाज-सुधार के कार्य करके, सच्चा साहित्य लिखकर ज्ञान-विज्ञान की रक्षा की। प्रकाश के पथ को प्रशस्त बनाया।

3– मनुष्य का तीसरा कर्त्तव्य है–
(जोगुवाम् अनुल्वणम् अपो वयतः)

योगी पुरुषों द्वारा अथवा निरन्तर ज्ञान एवं शुभ कर्मों का आचरण करने वाले मान्य जनों द्वारा (अनुल्वणम्) उल्झन रहित (अपः वयतः) श्रेष्ठ कर्मों का विस्तार करें।

मानव-शरीर पाने के उपरान्त श्रेष्ठ कर्मों में जैसे पञ्च महायज्ञ, ईश्वर का ध्यान, सत्संग, स्वाध्याय तथा योग के मार्ग पर चलना इन साधनों को अपनाकर यह जीव इहलोक और परलोक दोनों को सिद्ध कर सकता है।

4– मनुष्य का चौथा कर्त्तव्य है–

(मनुर्भव) अर्थात् हे जीव! तू सच्चा मानव बन। संसार में कितने लोग ऐसे होते हैं कि मानव चोला पाकर भी दानवता का, छल-कपट का, बेईमानी और झूठ का व्यवहार करते हैं। माँस खाते हैं। अण्डों का, शराब का तथा तम्बाकू आदि मादक द्रव्यों का सेवन करके मानवता को कलंकित करते हैं। किसी कवि का यह कथन कितना सार्थक है–

कुछ तो समय निकाल
आत्म शुद्धि के लिए।
नर-जन्म का उद्देश्य
न केवल विलास है।।

5– मन्त्र में मनुष्य का पाँचवां कर्त्तव्य है–

(दैव्यं जनं जनयाः) दिव्य गुणों से परिपूर्ण हितकारी, देवता स्वरूप पुरुषों को उत्पन्न करना।

मन्त्र में वार्णित गुणों को यह मानव अपने जीवन में यदि चरितार्थ कर लेगा तो निश्चय ही उसे अपना लक्ष्य मिल जायेगा।

मनुष्य का चरम लक्ष्य –

संसार में सृष्टि की सभी वस्तुयें उद्देश्यपूर्ण हैं। कोई भी चीज बिना प्रयोजन के नहीं बनी है। मनुष्य परमात्मा की सबसे उत्तम रचना है। यदि वह मानव शरीर है जिसमें जीव मुक्ति पाने का अधिकारी बनता है। वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि धर्म ग्रन्थ तथा भारतीय-संस्कृति मानव-जीवन का 'उद्देश्य' यही मानते हैं कि आत्म ज्ञानी बनकर, परमात्मा को पाकर 'मोक्ष' प्राप्त करना है। अत्यन्त दुःखों से छूटकारा पाना है। आवा गमन के बन्धनों से छूटना है। आत्म ज्योति के दर्शन इसी में होते हैं। अविद्या की ग्रन्थि इसी योनि में कटती है। प्रभु के आनन्द स्वरूप प्रकाश को देखने का यही जीवन सरोखा है। जब तक यह जीव अपने चरम लक्ष्य को पाप्त नहीं कर लेता है तब तक वह आवागमन के चक्करों से अर्थात् दुःखों से छूट नहीं पाता है। किसी ने सत्य ही कहा है–

श्वाँस श्वाँस पर 'ओ३म्' भज,
वृथा श्वाँस मत खोय।
न जाने इस जन्म का
आवन होय न होय।।

44 दुसरी मंजिल, फेज-2 विकासनगर,
नई दिल्ली

thearyasamaj.org

'विश्व में वेद-ज्ञान-भाषा की उत्पत्ति और आर्यों का आदि देश'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

"आर्य" शब्द की उत्पत्ति का इतिहास वेदों पर जाकर रूकता है। वेदों में अनेको स्थानों पर अनेकों बार आर्य शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ है कि आर्यों की उत्पत्ति में वेद की मान्यतायें व सिद्धान्त सर्वमान्य हैं। वेद कोई ५००, १५०० या २००० वर्ष पुराना ज्ञान या ग्रन्थ नहीं है अपितु विश्व का सबसे पुरातन ग्रन्थ है। इसे सृष्टि के प्रथम ज्ञान व ग्रन्थ की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि इससे पूर्व व पुरातन ज्ञान व ग्रन्थ अन्य कोई नहीं है। वेदों के बारे में महर्षि दयानन्द की तर्क व युक्तिसंगत मान्यता है कि वेद वह ज्ञान है जो अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को सृष्टिकर्ता, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, निराकार व सर्वान्तर्यामी ईश्वर से मिला था। वेदों के आविर्भाव के रहस्य से अपरिचित व्यक्ति यह अवश्य जानना चाहेगा कि निराकार व शरीर रहित ईश्वर, जिसके पास न मुख है, न वाक्-इन्द्रिय, वह सृष्टि के आदि मे ज्ञान कैसे दे सकता है व देता है? इसका उत्तर है कि ईश्वर आत्मा के भीतर सर्वव्यापक व सर्वान्तरयामी स्वरूप से विद्यमान होने के कारण ऋषियों की आत्माओं में प्रेरणा देकर ज्ञान प्रदान करता है। ईश्वर के चेतन तत्व, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान एवं सर्वान्तर्यामी होने के कारण इस प्रकार ज्ञान देना सम्भव कोटि में आता है। भौतिक जगत के उदाहरण से हम जान सकते हैं कि यदि किसी दूर खड़े व्यक्ति को कोई बात कहनी हो तो जोर देकर बोलते हैं और पास खड़े व्यक्ति को सामान्य व धीरे बोलने से भी वह सुन व समझ जाता है। अब यदि कहने व सुनने वाले आमने-सामने हैं और कोई गुप्त बात कान में कहें तो बहुत धीरे बोलने पर भी सुनने वाला व्यक्ति समझ जाता है। यह स्थिति उन दों व्यक्तियों की है जिनकी आत्मायें अलग-अलग शरीरों में हैं। अब यदि दोनों आत्मायें एक दूसरे से सटे हों या एक आत्मा दूसरी आत्मा में अन्तर्निहित, अन्तर्यामी व भीतर हो तो बोलने की आवश्यकता ही नहीं है। वहां तो अन्तर्यामी आत्मा की प्रेरणा व भावना को व्याप्य आत्मा जान व समझ सकता है। इससे सम्बन्धित एक योग का उदाहरण लेते हैं। योग की सफलता होने पर जीवात्मा के काम, क्रोध, लोभ, मोह रूपी मल, विक्षेप व आवरण हट व कट जाते हैं जैसे कि एक दर्पण पर मल की परत चढ़ी हो, वह साफ हो जाये तो उसके सामने का प्रतिबिम्ब दर्पण में स्पष्ट भाषता वा दिखाई देता है। योग में यही ईश्वर साक्षात्कार है और इस अवस्था में योगी - द्रष्टा के सभी संशय दूर हो जाते हैं और हृदय की ग्रन्थियां खुल जाती हैं। इसका अर्थ है कि उसे परमात्मा का साक्षात्कार, उसका दर्शन अर्थात् निर्भ्रान्त स्वरूप ज्ञात होकर वह संशय रहित हो जाता है। इस प्रकार जो सिद्ध योगी होता है उसे ईश्वर के बिना बोले वह सभी ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिसकी उसे ईश्वर से अपेक्षा होती है।

यद्यपि ईश्वर की प्रेरणा को समझना, जानना, दूसरों को जनाना व प्रवचन करना आदि एक विज्ञान है जिसे आदि व पश्चातवर्ती ऋषियों, योगदर्शनकार महर्षि पतंजलि, अन्य दर्शनकार, योगेश्वर कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि ने जाना, समझा, प्रत्यक्ष व साक्षात् सिद्ध किया था। सृष्टि की आदि में यदि ऐसा न हुआ होता तो फिर संसार की पहली पीढ़ी से लेकर अद्यावधि कोई भी मनुष्य ज्ञानी नहीं हो सकता था। इसका कारण यह है कि ज्ञान चेतन तत्व का गुण है। चेतन तत्व दो हैं, एक ईश्वर और दूसरी जीवात्मा। ईश्वर सर्वज्ञ एवं त्रिकालदर्शी है, वह जीवों के कर्मों की अपेक्षा से सब कुछ जानता है। ईश्वर के सर्वज्ञ, नित्य तथा जन्म-मृत्यु से रहित होने से इसका अस्तित्व सदा रहेगा। जड़ प्रकृति ज्ञानहीन व संवेदनाशून्य है। जीवात्मा ज्ञान की दृष्टि से अल्पज्ञ कहा जाता है व वस्तुतः है भी। यह साधारण मनुष्य हो या ऋषि, इसका ज्ञान अल्पज्ञ कोटि का होता है और ईश्वर साक्षात्कार हो जाने व समस्त संशयों के पराभूत हो जाने पर भी यह अल्पज्ञ ही रहता है। अल्पज्ञ जीवात्मा में, अन्यों की अपेक्षा से कम या अधिक, जितना भी ज्ञान है वह उसका ईश्वर प्रदत्त स्वाभाविक व नैमित्तिक है। स्वाभाविक व नैमित्तिक ज्ञान का दाता व मूल कारण भी एकमात्र ईश्वर ही है। ईश्वर अपनी सर्वज्ञता से अपने ज्ञान के अनुरूप सृष्टि व मनुष्यों आदि प्राणियों की रचना करता है। ईश्वर की रचना को देखकर मनुष्य अपने स्वाभाविक ज्ञान व ऋषियों-माता-पिता-आचार्यों से प्राप्त ज्ञान से सृष्टि आदि को देख व समझ कर नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करता है व उसमें वृद्धि करता है। यदि ईश्वर अपने ज्ञान से सृष्टि व प्राणियों की रचना न करे व मनुष्य आदि प्राणियों को स्वाभाविक ज्ञान न दे, तो फिर मनुष्य सदा-सदा के लिए अज्ञानी ही रहेगा। अतः सृष्टि की आदि में परमात्मा आदि चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान देता है। उसी ज्ञान से ऋषि भाषा का उच्चारण व संवाद आदि करते हैं व ईश्वर का ध्यान करते हुए भाषा व लिपि का चिन्तन कर उसी की सहायता से लिपि व व्यापकरण आदि की रचना करते हैं। इस क्रम में उपदेश, प्रवचन, अध्ययन, अध्यापन व लेखन आदि के द्वारा मनुष्यादि अन्य भाषा व विविध ज्ञान का संवर्धन करते हैं।

इस प्रकार परम्परा से चला आ रहा ज्ञान माता-पिता को मिलता है, वह अपने पुत्र को देते हैं और फिर वह पुत्र गुरुकुल व विद्यालय में आचार्यों से अध्ययन व पुरूषार्थ करके अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं। यह ज्ञान की वृद्धि भी उसकी बुद्धि की ऊहापोह एवं ईश्वर की कृपा व सहयोग का परिणाम होती है। यदि सर्वज्ञ ईश्वर आरम्भ में ज्ञान न दे तो मनुष्य या मनुष्य समूह कदापि स्वयं भाषा व ज्ञान को उत्पन्न करके उसे प्रकाशित नहीं कर सकते। ज्ञान भाषा में निहित होता है। यदि भाषा नहीं है तो मनुष्य विचार ही नहीं कर सकता। बिना विचार व ज्ञान के दो मनुष्य एक दूसरे को संकेत भी नहीं कर सकते। अतः माता-पिता द्वारा सन्तानों को भाषा का ज्ञान कराने की भांति सृष्टि के आरम्भ में आदि मनुष्यों को भाषा की प्राप्ति ईश्वर से ही होती है। वह आदि भाषा वैदिक भाषा थी। ईश्वर ने आदि सृष्टि में चार ऋषियों को चार वेदो का ज्ञान भाषा व मन्त्रों के पदो के अर्थ सहित दिया था। वेदों से सम्बन्धित सभी जानकारियों, वेदों के मर्म व तात्पर्य आदि को जानने के लिए महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को देखना उपयोगी व अनिवार्य है।

विचार, चिन्तन, यौगिक अनुभव व आप्त प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि के आदि में अमैथुनी व उसके बाद अनेक पीढ़ियों तक मनुष्यों की स्मरण शक्ति वर्तमान के मनुष्यों की तुलना में अधिक तीव्र थी। उस समय उन्हें स्मरण करने के लिए कागज, पेन, पेंसिल व पुस्तकों की आवश्यकता नहीं थी। वह जो सुनते थे वह उन्हें स्मरण हो जाता था। कालान्तर में स्मृति ह्रास होना आरम्भ हो गया तो ऋषियों ने इसके लिए व्याकरण सहित अनेक विषय के ग्रन्थों की रचना की। वेदों के मन्त्रों व उसके शब्दों के अर्थों को जानने के लिए ग्रन्थों की रचना हुई एवं इसके साथ वैदिक ज्ञान व विद्या के विस्तार के लिए श्रार। वर्तमान में इस कार्य के लिए व्याकरण के ग्रन्थ पाणिनि अष्टाध्यायी, पतंजलि महाभाष्य, यास्क के निरूक्त व निघण्टु आदि ग्रन्थ उपलब्ध हैं। प्राचीन काल में भी समय-समय पर अनेक ऋषियों ने आवश्यकता के अनुरूप व्याकरण व अन्य ग्रन्थों की रचना की जिससे वेदार्थ ज्ञान में कोई बाधा नही आई। इस विषय पर विस्तार से जानने के लिए पं. युधिष्ठिर मीमांसक कृत संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास पठनीय है। मीमांसक जी ने इस ग्रन्थ की रचना कर एक ऐसा कार्य किया है जो सम्भवतः भविष्य में अन्य किसी के द्वारा किया जाना सम्भव नहीं था। इसके लिए सारा संस्कृत जगत उनका चिरऋणी रहेगा।

महर्षि दयानन्द ने अपने पुरुषार्थ व लगन से वेद व उसके व्याकरण के ग्रन्थों का अध्ययन करने में अपूर्व पुरुषार्थ किया। उनका यह पुरुषार्थ प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द के रूप में एक योग्य गुरु के प्राप्त होने से सफलता को प्राप्त हुआ। सत्य की खोज के प्रति दृण इच्छा शक्ति, मृत्यु व ईश्वर के सत्य स्वरूप की खोज, अपने विशद अध्ययन, पुरुषार्थ, योगाभ्यास आदि से वह वेदों में निष्णात अद्वितीय ब्रह्मचारी बने। महर्षि दयानन्द के समय में सारा देश वेदों से दूर जा चुका था। लोग मानते थे कि वेद लुप्त हो गये हैं। वेदों के साथ ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद माना जाता था जिनमें वेदों से विरूद्ध अनेक मान्यतायें व विधान थे। गीता व रामायण की प्रतिष्ठा वेदों से अधिक थी। सायण व महीधर आदि विद्वानों के पूर्ण व आंशिक जो वेद भाष्य यत्र-तत्र थे, वह भी वेदों के यथार्थ भाष्य न होकर विद्रूप अर्थो ये युक्त थे। विदेशी व हमारा शासक वर्ग वेदों को गड़रियों के गीत, बहुदेवतावाद का पोषक व अस्पष्ट अर्थों का संग्रह बता रहे थे। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, सब सत्य विद्याओं का पुस्तक, धर्म जिज्ञासा में वेद परम प्रमाण एवं इतर संसार के सभी वेदानुकूल हाने पर परतः प्रमाण जैसी सत्य मान्यतायें एवं सिद्धान्त बताकर वेदों को स्वतः प्रमाण की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद ही सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर से प्राप्त प्रथम, आदि व नित्य ज्ञान की पुस्तकें हैं। वेद में ज्ञान, विज्ञान, सृष्टिक्रम, युक्ति व प्रमाणों के विरूद्ध कुछ भी नहीं है। महर्षि दयानन्द ने ही उद्घोष किया कि संसार में मनुष्यों की दो ही श्रेणियां है। एक आर्य व दूसरा अनार्य। आर्य भारत के मूल निवासी हैं। आर्यों के आर्यावर्त वा भारत को आदि काल में बसने व बसाने से पहले यहां कोई मनुष्य समुदाय, जाति के लोग निवास नहीं करते थे। सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक रचित असंख्य ग्रन्थों में कहीं नहीं लिखा कि आर्य किसी अन्य देश व प्रदेश से आकर यहां बसे, यहां के लोगों से युद्ध कर उन्हें पराजित किया। जब सम्पूर्ण आर्यावर्त के लोगों में आर्य व अनार्य का कोई विवाद ही नहीं है तो फिर स्वार्थी व चालाक व आर्य धर्म व संस्कृति विरोधी अन्य पक्षपाती विदेशी मताग्रहियों का आरोप क्यों व कैसे स्वीकार किया जा सकता है? विदेशियों के पास धन व अन्य प्रचुर साधन थे। उन्होंने इस देश के कुछ पठित लोगों को अपने प्रलोभन देकर व उनसे आकर्षित कर छद्म व स्वार्थी मानसिकता से प्रभावित किया। कुछ प्रलोभन में फँस गये और उनकी हां में हां मिलाने लगे। ऐसा होना स्वाभाविक होता है। कुछ धर्म को अफीम मानने की विचारधारा से पोषित तथाकथित इतिहासकार आर्य संस्कृति से घृणा रखते रहे हैं। उन्होंने सत्य प्रमाणों पर ध्यान दिये बिना अर्थात् वेद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत व १८ पुराणों का अवगाहन किए बिना, एक षडयन्त्र के अन्तर्गत विदेशियों की मान्यताओं व विचारों को स्वीकार कर लिया। आज भी विदेशियों की आर्यो के अन्य देशों से भारत आने की स्वार्थ व पक्षपातपूर्ण मान्यता को हम विमूढ़ बनकर ढ़ो रहे हैं। हमें लगता है कि इन मान्यताओं के अनुगामी व प्रवर्तक हमारे स्वदेशी तथाकथित बुद्धिजीवी सत्य के आग्रही कम ही हैं जिसका कारण उनका पाश्चात्य विद्वानों का अनुमागी होना, संस्कृत ज्ञान से अनभिज्ञता, संस्कृत भाषा के अध्ययन से विरत होना व आलस्य प्रवृति तथा धन का मोह आदि ऐसे कारण हैं जिससे वह सत्य तक पहुंचने में असमर्थ है। महर्षि दयानन्द ने अनेक दुर्लभ सहस्रों संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया था जिससे वह निर्णय कर सके थे कि आर्य भारत के मूल निवासी हैं व इनसे पूर्व आर्यावर्त्त में आर्यो से भिन्न कोई जाति निवास नहीं करती थी।

आर्यो का आदि व मूल देश इस पृथिवी तल पर कौन हो सकता है? इस पर विचार करने पर यह तथ्य सामने आता है कि जहां आर्यों का धर्म ग्रन्थ, साहित्य, संस्कृति व सभ्यता अधिकतम् रूप में व्यवहृत, प्रयोग की जाती हो, जहां उसका चलन हो व वह फल-फूल रही हो। इतिहास में भारत के अतिरिक्त ऐसा अन्य कोई स्थान विदित नहीं है जहां आर्यों के इतिहास से सम्बन्धित इतने अधिक स्थान, साहित्य व अन्य सहयोगी प्रमाण हों। लाखों वा करोड़ों वर्ष पूर्व हुए राम-रावण, द्वापर की समाप्ति पर हुए महाभारत युद्ध व उस समय व उसके पूर्ववर्ती राजवंशों का इतिहास, महाभारत नामक विशाल ग्रन्थ में उपलब्ध व सुरक्षित है। पुराणों में भी इतिहास विषयक अनेक उल्लेख व स्मृतियां उल्लिखित हैं। यह महाभारत का युद्ध आज से लगभग ५,१०० वर्ष पूर्व हुआ था। हम अनुभव करते हैं कि जिस प्रकार से सूर्य का उदय पूर्व दिशा से होता है उसी प्रकार से ज्ञान के आदि ग्रन्थ 'वेद' रूपी सूर्य का उदय भी भारत से ही हुआ है जिसका प्राचीन नाम आर्यावर्त था। यही भूमि वेदों व अमैथुनी सृष्टि के उद्गम की भूमि है। भारत का ही प्राचीन नाम आर्यावर्त्त है और आर्यावर्त्त नाम से पूर्व इस देश का कुछ भी नाम नहीं रहा है और न ही आर्यो से पूर्व कोई मनुष्य या उनका समुदाय निवास करता था। यह भी ध्यान देने योग्य है कि आर्यावर्त के अस्तित्व में आने तक संसार का अन्य कोई देश अस्तित्व में नहीं आया था क्योंकि उन निर्जन देशों को बसाने के लिए आर्यावर्त्त से आर्यों को ही जाना था।

आज संसार की सारी पृथिवी पर लोग बसे हुए हैं। समस्त पृथिवी पर लगभग १९४ देश हैं। इन देशों के निवासी पूर्व समयों में पड़ोस के देशों से आकर वहां बसे हैं। जो आरम्भ में, सबसे पूर्व, आये होगें, उससे पूर्व वह स्थान खाली रहा होगा। हो सकता है उसके बाद पड़ोस की अन्य तीन दिशाओं से भी कुछ लोग वहां आकर बसे हों। उन देशों में वहां

thearyasamaj.org

क्योंकि प्रायः एक ही मत या धर्म है, अतः कहीं कोई विवाद नहीं है। सृष्टि के आरम्भ से पारसी व बौद्ध-जैन-ईसाई मत के आविर्भाव तक संसार के सभी लोग एक वैदिक मत को मानते रहे। इस मान्यता के पक्ष में भी प्रमाण उपलब्ध हैं कि लगभग ५,१०० वर्ष पूर्व भारत की भूमि पर हुए महाभारत युद्ध के बाद आर्यावर्त्त अवनति को प्राप्त हुआ। इससे पूर्व हमारे देश के राजपुरूष देश-देशान्तर के सभी देशों में जाते-आते थे। परस्पर व्यापार भी होता था और वहां की राज व्यवस्था भारत के ऋषियों, विद्वानों व राजपुरूषों के दिशा-निर्देश में चलती थी। वह माण्डलिक राज्य कहलाते थे और भारत के चक्रवर्ती राज्य को कर देते थे। महर्षि दयानन्द (१८२४-१८८३) ने अपने काल में हस्तलिखित दुलर्भ हजारों ग्रन्थों का अध्ययन किया था। उन्होंने निष्कर्ष रूप में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत पर्यन्त आर्यों का सारे विश्व में एकमात्र, सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य रहा है। अन्य देशों में माण्डलिक राजा होते थे जो भारत को कर देते थे और हमारे देश के राजपुरूष व ऋषि आदि भी इन देशों में सामाजिक व राजनैतिक व्यवस्था को आर्यनीति के अनुसार चलाने, शिक्षा-धर्म प्रचार व व्यापार आदि कार्यों हेतु आया-जाया करते थे। यह प्रमाण अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह वाक्य देश-विदेश में रहने वाले करोड़ों वेदभक्तों के लिए तो मान्य है परन्तु अंग्रेजी परम्परा के लेखक व विद्वानों के लिए यह इसलिए स्वीकार्य नहीं है कि विदेशी विद्वान ऐसा नहीं मानते थे। वह क्यों नहीं मानते थे इसके कारणों में जाने की इन विद्वानों के पास न योग्यता है और न आवश्यकता। उनका अपना मनोरथ सिद्ध हो जाता है, अतः वह गहन व अति श्रम साध्य गम्भीर अनुसंधान नहीं करते। ऐसे कार्य तो स्वामी दयानन्द व उनके अनुयायी ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, पं. भगवद्दत्त व स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जैसे खोजी व जुझारू लोग ही कर सकते थे व किया है। हम यहां यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि आर्यों को भारत से भिन्न स्थानों का निवासी मानने और आर्यों का अन्य स्थान से भारत में आने के मिथ को सत्य मानने वालों के पास एक भी पुष्ट प्रमाण नहीं है जबकि महर्षि दयानन्द व उनके अनुयायियों मुख्यतः स्वामी विद्यानन्द सरस्वती आदि ने आर्यो का भारत का मूल निवासी होना अनेक तर्कों, प्राचीन ग्रन्थों, युक्ति-प्रमाणों, इतिहास व पुरातत्व के प्रमाणों आदि की सामग्री से सिद्ध किया है।

यहां हम इस सम्भावना पर भी विचार करते है कि यदि महाभारत युद्ध न हुआ होता तो क्या होता। महाभारत युद्ध दुर्योधन की हठधर्मिता का परिणाम था। यदि उसका ही जन्म न होता या वह साधु प्रकृति का होता तो भी महाभारत न हुआ होता। ऐसी स्थिति में श्री कृष्ण, भीष्म, विदुर, अर्जुन व युधिठिर आदि आर्यावर्त-भारत व सारे विश्व को वेदमार्ग पर चलाते। अर्जुन ने तो अमेरिका के राजा की पुत्री उलोपी से विवाह तक किया था। भारतवासियों का अमेरिका आने-जाने का यह एक प्रमाण है। ऐसे और अनेक उल्लेख व प्रमाण प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। महर्षि वेद व्यास के पुत्र पाराशर के अमेरिका में जाने वहां निवास करने और अध्ययन-अध्यापन कराने के प्रमाण भी मिलते हैं। महाभारत यदि न होता तो इस सम्भावना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फिर सारे संसार मे केवल एक वैदिक धर्म ही होता। अज्ञानता के कारण व भारत से दूर होने के कारण मध्यकाल में भारत से बाहर वैदिक मत से इतर पारसी, ईसाई व इस्लाम आदि जिन मतों का आविर्भाव हुआ, वह न हुआ होता। ऐसी स्थिति में हम व दुनियां के अन्य देश जो गुलाम हुए, वह भी न हुए होते। और इन सब स्थितियों में किसी देशी या विदेशी द्वारा इस विवाद को जन्म ही न दिया जाता कि "आर्य" भारत के ही मूल निवासी हैं या नहीं? अंग्रेजों का विदेशी होना और भारत को पराधीन बना कर यहां के मूल निवासी आर्यों पर शासन करना ही इस विवाद का मुख्य कारण है। अंग्रेजों को यह डर सताता था कि इस देश नागरिक उन्हें विदेशी कहकर 'विदेशियों भारत छोड़ों' या 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' या फिर "अपने देश में अपना राज्य" या "स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि उत्तम होता है और स्वदेशी राज्य की तुलना में माता-पिता के समान कृपा, न्याय व दया होने पर भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता" आदि सिद्धान्तों व नारों के आधार पर भारत से बाहर न निकाल दें। अंग्रेजों में असुरक्षा की भावना इस कारण थी कि उन्होंने भारतीयों को गुलाम बनाया हुआ है। वह विदेशी थे और भविष्य मे वह दिन आ सकता था कि जब उनके विदेशी होने के आधार पर उन्हें भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया जा सकता था। ऐसा ही हुआ। उनकी लूट, अत्याचारों व विदेशी होने के कारण ही उनके विरूद्ध क्रान्तिकारी व अहिंसक आन्दोलन चले। अतः अपनी जड़ें जमाने व चिरकाल तक भारत पर शासन करने के लिए उन्होंने भारत के प्रबुद्ध वर्ग "आर्यों" को विदेशी कहा। महर्षि दयानन्द तो सन् १८७५ में सत्यार्थ प्रकाश में खुलकर कह चुके थे कि अपने देश में अपना स्वदेशी राज्य ही सर्वोत्तम होता है एवं माता-पिता के समान न्याय, दया व कृपा होने पर भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक कभी नहीं हो सकता। महाभारत का युद्ध आर्यों अर्थात् कौरव-पाण्डव राज-परिवारों की परस्पर स्वार्थ वा फूट, उनके आलस्य व प्रमाद आदि कारणों से हुआ जिसके भावी परिणामों से वर्तमान में भारत में अज्ञान, पाखण्ड, कुरीतियां, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, वर्ण या जातीय व्यवस्था आदि के नाम पर स्त्री व अपठित व असंगठित शूद्रों पर अत्याचार आदि की वृद्धि होना, विदेशों में नाना अवैदिक व अज्ञानपूर्ण मतों का अस्तित्व में आना, सारी दुनियां में धर्मान्तरण का चक्र चलना व इस प्रकार के कारणों से एक दूसरे का घात करना आदि, जिससे समय-समय पर भयंकर युद्ध हुए व सज्जनों को मृत्यु के घाट उतारा गया।

यह संसार ईश्वर ने बनाया है। यह हमारी पृथिवी विश्व ब्रह्माण्ड में एकमात्र नहीं अपितु ऐसी असंख्य पृथिवियां एवं सूर्य व चन्द्र आदि ग्रहों से सारा ब्रह्माण्ड भरा है। यह ईश्वर की विशालता, उसी सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता, निराकारता व सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप होने का प्रमाण है। यहां यह विचार करते हैं कि ईश्वर ने इस विशाल पृथिवी को बनाकर मनुष्यों को किसी एक स्थान पर जन्म दिया या संसार के अनेकानेक भागों में उत्पन्न किया?इसके लिए यह विचार करना उपयोगी होगा कि जब भी हम किसी नई चीज का आविष्कार करते हैं तो पहले कुछ सांचे या प्रोटोटाइप बनायें जाते हैं जिनकी संख्या सीमित होती है। प्रथम उत्पादन एक ही स्थान पर होता है, सर्वत्र नहीं। आवश्यकता पड़ने पर परिस्थिति के अनुसार अनेक स्थानों पर विस्तार किया जाता है। जब एक स्थान पर कुछ सहस्र स्त्री-पुरूषों के जन्म लेकर समय के साथ उनकी संख्या में वृद्धि होने व परस्पर के विवादों आदि के होने पर वह सारे संसार में फैल सकते हैं तो सर्वत्र मनुष्यों की सृष्टि करना ईश्वर के लिए करणीय नहीं था। हम देखते हैं कि परिवार का मुख्य व्यक्ति परिवार की आवश्यकता के अनुरूप निवास बनाता है। आगे चल कर परिवार में नई सन्तानें आती हैं, वह बड़ी होती है, उनमें क्षमता होती है, वह अपने साधनों, क्षमता, अपनी भावना व इच्छानुसार उचित स्थान का चयन कर अपने निवास के लिए अपना पृथक भवन बनवाते हैं। इसी प्रकार से संसार में निवास बनते हैं। सृष्टि के आरम्भ में यही सम्भावना अधिक बलवती लगती है, और इसका आप्त प्रमाण भी है, कि सृष्टि के आरम्भ में केवल एक स्थान "तिब्बत" में ईश्वर ने मानव सृष्टि की। सहस्रों स्त्री-पुरूषों व अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा, ब्रह्मा आदि ऋषियों को उत्पन्न किया। ऋषियों को प्रेरणा देकर उन्हें वेदों का ज्ञान दिया। उन्होंने अन्यों को पढ़ाया। उन युवा स्त्री-पुरूषों के विवाह आदि सम्पन्न किये। उन सभी को उनके कर्तव्यों का बोध कराया। उनसे सन्तानोत्पत्ति हुई। समय व्यतीत होने के जनसंख्या बढ़ी। परस्पर विवाद भी हुए। भिन्न मत के लोग समूह में अन्यत्र जाकर रहने लगे। वहां भी जनसंख्या बढ़ी और फिर उनमें से लोग अपनी आवश्यकता, इच्छा, अन्वेषण की रूचि आदि के कारण खाली पड़ी पृथिवी में चारों दिशाओं में स्थान-स्थान पर जाकर बसने लगे। इस प्रकार से १,९६,०८,५३,११४ वर्षों में यह आज का संसार अस्तित्व में आया है। यहां अब पश्चिमी विद्वान मैक्समूलर का वचन उद्धृत करते हैं - 'यह निश्चित हो चुका कि हम सब पूर्व से ही आये हैं। इतना ही नहीं, हमारे जीवन की जितनी भी प्रमुख और महत्वपूर्ण बातें हैं, सबकी सब हमें पूर्व से ही मिली हैं। ऐसी स्थिति में जब हम पूर्व की ओर जायें तब हमें यह सोचना चाहिए कि पुरानी स्मृतियों को संजोये हम अपने पुराने घर की ओर जा रहे हैं।' अंग्रेजी में अपनी पुस्तक "India : What can it Teach us?" (Page 29) पर उन्होंने लिखा कि 'We all come from the Eastall that we value most has come to us from the East, and by going to the East, every-body ought to feel that he is going to his 'old home' full of memories, if only we can read them." मैक्समूलर के यह शब्द महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास मे लिखे शब्दों की स्वीकारोक्ति हैं जहां उन्होंने लिखा है कि "मनुष्यों की आदि सृष्टि त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत में हुई और आर्य लोग सृष्टि के आदि में कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश भारत में आकर बसे। इसके पूर्व इस देश का कोई भी नाम नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे।" हम यहां यह भी जोड़ना उपयुक्त समझते है जब आर्य तिब्बत से यहां आकर बसे उस समय इस भूमि भारत व संसार के समस्त भूभाग पर कहीं कोई मनुष्य निवास नहीं करता था। इन्हीं प्रो. मैक्समूलर ने सन् १८६६ में प्रकाशित चिप्स फ्राम ए जर्मन वर्कशाप के पृष्ठ २७ पर लिखा है कि "वैदिक सूक्तों की एक बड़ी संख्या बिल्कुल बचकानी, निकृष्ट, जटिल और अत्यन्त साधारण है।" बार में यही लेखक इसके विपरीत अपने ऋग्वेद संहिता के भाष्य के चौथे खण्ड में लिखता है कि "एक वैदिक विद्वान अथवा विद्वानों की एक पीढ़ी द्वारा भी ऋग्वेद की ऋचाओं के रहस्यों को खोज निकालना असम्भव है।" वेद, वैदिक धर्म एवं संस्कृति के मर्मज्ञ विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने मैक्समूलर के इन शब्दों पर अपनी टिप्पणी करते हुए लिखा है कि ऋग्वेद के सम्बन्ध में इस प्रकार की भावना व्यक्त करने के लिए मैक्समूलर तभी विवश हुए होंगे जब उन्हें वहां इतने ऊंचे विचार दीख पड़े होंगे जिनके मुकाबिले में विकासवाद की दीवारें हिलती जान पड़ी होंगी। हम समझते हैं कि मैक्समूलर का यह लिखना कि ऋग्वेद की ऋचाओं के रहस्यों को खोज निकालना असम्भव है, इससे उनका तात्पर्य यह है कि ऋग्वेद के मन्त्रों के जो यथार्थ अर्थ हैं वह इतने गम्भीर, अर्थ पूर्ण, महत्वपूर्ण व उपादेय हैं कि उनके व उनके समकक्ष विद्वान के लिए वेदों के यथार्थ अर्थ जानना, प्रकट करना व बताना असम्भव है। महर्षि दयानन्द ने अपने वेदाध्ययन में इस तथ्य को साक्षात् किया कि वेद मनुष्य कृत ज्ञान न होकर ईश्वर से प्राप्त ज्ञान है और घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। मैक्समूलर भी प्रकारान्तर से इसका समर्थन करते दीखते हैं।

लेख को विराम देने से पूर्व हम ५,१०० वर्ष पूर्व रचित महाभारत में उपलब्ध आर्यो का आदि देश विषयक एक पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। महाभारत में कहा है - **"हिमालयाभिधानोऽयं ख्यातो लोकेषु पावनः। अर्धयोजनविस्तारः पंचयोजनमायतः।। परिमण्डलयोर्मध्ये मेरूरूत्तमपर्वतः। ततः सर्वाः समुत्पन्ना वृतयो द्विजसत्तम।। ऐरावती वितस्ता च विशाला देविका कुहू। प्रसूतिर्यत्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ।।"** इसका अर्थ व इस पर टिप्पणी करते हुए इस विषय के अधिकारी मर्मज्ञ विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आर्यो का आदि देश और उनकी सभ्यता' में लिखते हैं कि - 'संसार में पवित्र हिमालय है। इसमें आधा योजन चौड़ा और पांच योजन घेरे वाला 'मेरू' है जहां मनुष्यों की उत्पत्ति हुई। यहीं से ऐरावती, वितस्ता, विशाला, देविका और कुहू आदि नदियां निकलती हैं। इन प्रमाणों में हिमालय के मेरू प्रदेश में आदि सृष्टि होने का वर्णन है।' वह आगे लिखते हैं कि इससे भी अधिक पुष्ट प्रमाण हमें इस विषय में मिले हैं जिनसे अमैथुनी सृष्टि के हिमालय में होने का निश्चय होता है। जिस मेरू स्थान का महाभारत के उक्त श्लोकों में निर्देश किया गया है, उसी के पास 'देविका पंचमे पार्श्वे मानसं सिद्धसेवितम्' अर्थात् देविका के निवास के पश्चिमी किनारे पर 'मानस' है। यह मानस अब एक झील है जो तिब्बत के अन्तर्गत है। एक बार पुनः महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में लिखे उनके शब्दों को देख लेते हैं जिनसे महाभारत के उपर्युक्त वचनों की संगति लगती है - 'मनुष्यों की आदि सृष्टि त्रिविष्टप अर्थात् तिब्बत में हुई और आर्य लोग सृष्टि के आदि में कुछ काल पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश भारत में आकर बसे। इससे पूर्व इस देश का कोई भी नाम नहीं था और न कोई आर्यों के पूर्व इस देश में बसते थे।" हम समझते हैं कि इससे भारत ही आर्यों का मूल देश सिद्ध हो जाता है। इसके विपरीत विचार या मान्यतायें कल्पित, पूर्वाग्रहों से युक्त होने व प्रमाणों के अभाव में निरस्त हो जाती है।

पताः १९६ चुक्खूवाला-२
देहरादून-२४८००१
दूरभाषः ०९४१२९८५१२१

thearyasamaj.org

आर्य समाज राजेन्द्र नगर का 62वाँ वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर ने अपना 62वाँ वार्षिक उत्सव सोमवार 21 अप्रैल से रविवार 27 अप्रैल तक बहुत ही सफलता पूर्वक आयोजित किया। पहले छह दिन प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक अथर्ववेदीय बृहद् यज्ञ जो कि आचार्य डॉ. शिवदत्त पांडेय जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य कैलाश शास्त्री जी तथा आचार्य श्री अंकित शास्त्री जी द्वारा करवाया गया तथा सायंकाल 7 बजे से 8 बजे तक श्री अंकित शास्त्री जी के भजन तथा 8 से 9 बजे तक आचार्य डा. शिवदत्त पाण्डेय जी के प्रवचन बहुत ही प्रभावशाली रहे।

रविवार 27 अप्रैल को विशेष समारोह में प्रातः 8:00 बजे से 9 बजे तक यज्ञ पूर्णाहुति हुई पुनः श्री अंकित शास्त्री जी के मधुर भजनों के पश्चात् "राष्ट्र धर्म संस्कृति एवं मानव निर्माण" विषय पर आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य कैलाश शास्त्री जी, आचार्य चन्द्र शेखर जी के बहुत ही प्रेरणा दायक प्रवचन हुए आचार्य डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी ने समारोह की अध्यक्षता बहुत ही कुशलता से की तथा अध्यक्षीय भाषण में बहुत ही सुन्दर विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन श्री सतीश मैहता जी एवं श्री नरेन्द्र वलेचा जी ने किया एवं प्रधान श्री अशोक सहगल जी ने सबका धन्यवाद प्रकट किया।

आवश्यकता

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के फिजियोथेरेपी सेंटर के लिये एक सुयोग्य फिजियोथेरेपिस्ट एवं टैक्नीशीयन की आवश्यकता है। इच्छुक सज्जन निम्न पते पर शीघ्र संपर्क करें। – मंत्री, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, निकट राजेन्द्रा प्लेस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली–110060 दूरभाष : 011–25760006

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, राजस्थान राज्य के अलवर जिले में साबी नदी के किनारे स्थित एक रमणीक संस्था है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है तथा वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र हैं। अतः आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार में योगदान दें।

गुरुकुल की विशेषताएं

1. कक्षा 6 से 9 तक तथा 11वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ। 2. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त। 3. विस्तृत भू–भाग एवं आधुनिक सुविधायुक्त विशाल भवन। 4. पौष्टिक भोजन। 5. कम्प्यूटर शिक्षा। 6. योग्य एवं अनूभवी आचार्यगण। 7 शान्त सुरम्य एवं एकान्त वातावरण। 8. तरण ताल। 9. 24 घंटे बिजली हेतु सौर उर्जा संयंत्र। सम्पर्क करें – आचार्या प्रेम लता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया जिला अलवर, राजस्थान–301401, फोन नं. 01495 – 270503, मो. 09416747308

अंतरंग सभा की बैठक

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अंतरंग सभा की बैठक जो दिनांक 24.05.2014 को आर्य समाज बी–2 ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में हुई, इस बैठक में इस बात पर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की गयी कि स्वतन्त्रता के पश्चात् पहली बार भारत देश में वास्तविक रूप में "हिन्दू राज्य" स्थापित हुआ है। बैठक में श्री हरबंस लाल कोहली (कार्यकारी प्रधान) भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ने यह सुझाव दिया कि देश में बदली हुई परिस्थिति का लाभ उठाना चाहिए और हिन्दी भाषा को देश की सही मायनों में राज भाषा बनानी चाहिए तभी महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न पूरा किया जा सकता है। गौ हत्या पर भी अब पूरी तरह से प्रतिबन्ध लगना चाहिए गौ हत्या समाप्त होने से गौमांस खाने वाले विधर्मियों की संख्या कम हो जायेगी। और शुद्धि का कार्य का प्रारम्भ, और गौ हत्या बन्द होना, दोनों का ही देश के हित में बड़ा भारी महत्व है। –हरबंस लाल कोहली

शुद्धि प्रचार–यज्ञ आयोजन

दो दिन का वैदिक प्रचार शिकोहाबाद की हरिजन बस्ती में किया गया जिसमे प्रातः यज्ञ के साथ सभी से आहूति डलवाकर सभी को यज्ञोपवीत पहनाया गया यज्ञ के समक्ष संकल्प दिलवाया गया कि भविष्य में कभी भी किसी के वहकावे में अपना वैदिक धर्म नहीं छोड़ेंगे और जो भाई बहन अपने मत से बिछुड गये है उन्हें पुनः वापिस लाने का पूरा प्रयास करेंगे। शिकोहाबाद के आदर्श नगर बाल्मीक आश्रम में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ इसमें पतंजलि एवं भारत स्वाभिमान के जिलाध्यक्ष श्री पी.एस.राना ने भी हिन्दू धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डाला, पं. नवीन शास्त्री जिला प्रचारक ने यहाँ प्रवचन किया उपस्थित जनसमूह में श्री कमलेश आर्य, श्री महेश चन्द्र आर्य, श्री शिवराज, पूर्व प्रधान आ. वीरेन्द्र सिंह वाल्मीक, श्री रत्था सिंह वाल्मीक एवं लगभग 25 परिवार हरिजनों ने भाग लिया। –पं. नवीन शास्त्री

शुद्धि संस्कार

कु. तबस्सुम, आयु 22 वर्षीय मुस्लिम युवती ने स्वेच्छा से इस्लाम मत छोड़कर, वैदिक (हिन्दु) धर्म स्वीकार किया। शुद्धि संस्कार आर्य समाज आर्य नगर पहाड़गंज, नई दिल्ली में पं. महेन्द्रपाल आर्य जी द्वारा दिया गया। शुद्धि संस्कार के पश्चात इनका नया नाम प्रथा रखा गया और हिन्दू मत के एक युवक से इनका विवाह संस्कार किया गया। वैदिक (हिन्दू) धर्म अपनाने पर इस युवती का आर्य समाज तथा धर्म जागरण मंच की ओर से हार्दिक स्वागत किया गया और फूलों व नये वस्त्रों से सम्मानित किया गया।

मई–2014 के आर्थिक सहयोगी

श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी जी, मंत्री, आर्य समाज बी 2–ब्लाक, जनकपुरी		6000/–
आर्य समाज इन्दिरा नगर, बैंगलौर, कर्नाटक	मासिक	1000/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज माडल बस्ती, पुष्पावती पुरी दयानन्द आर्दश विद्यालय	दो माह	1000/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री, शुद्धि सभा, दिल्ली	मासिक	500/–
कैप्टन प्रेम कुमार वलेचा जी, मूयर विहार फेज–1, दिल्ली		500/–
श्रीमती स्वतन्त्रलता शर्मा जी, प्रधान –आर्य समाज, इन्दिरानगर बैंगलोर	मासिक	500/–
श्री आर.एस. शर्मा जी, इन्दिरापुरम–गाजियाबाद	मासिक	200/–

श्री चन्द्रभान चौधरी जी द्वारा एकत्रित दान

कुमारी गरिमा जी, ए–2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
श्रीमती चन्द्रकला राजपाल जी, ए–2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली	मासिक	500/–
श्रीमती संतोष कोछड़ जी, ऑरिडेन्स अपार्ट. विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती डा. पुष्पलता वर्मा जी, आर्य समाज विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री रामनाथ आहूजा जी, एच–ब्लाक, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्रीमती ऊषा कुकरेजा जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–
श्री सुखदेव महाजन जी, विकासपुरी, नई दिल्ली		100/–

श्रीमती सावित्री शर्मा जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती सरोज सहगल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
श्रीमती उमा बजाज जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/–
सुश्री वेद मदान जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	300/–
श्रीमती विमला चौपडा जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	250/–
श्री भीष्मलाल जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती तारा ढीगरा जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती राजकिंगर जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती शैली वोहरा जी, आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती निरुपमा शर्मा, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली	100/–

शुद्धि सभा की बैठक दिनांक 24.05.2014 को प्राप्त दान

प्रो. डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली	200/–
श्री विजय गुप्त जी, आर्य समाज, मदनगीर, नई दिल्ली	200/–
श्री चतर सिंह नागर जी, प्रधान–आर्य समाज मस्जिद मौठ, नई दिल्ली	200/–
श्री रणवीर सिंह जी, प्रधान–आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती संतोष वधवा जी, आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली	200/–
श्री सूर्य पाल सिंह जी, मंत्री आर्य समाज सै.9, आर.के.पुरम्, नई दिल्ली	200/–
मा. श्री हरीशचन्द्र जी मंत्री आर्य समाज मदनगीर, नई दिल्ली	200/–
श्री नाहर सिंह वर्मा जी, शालीमार बाग, नई दिल्ली	200/–
ला. ओम प्रकाश अग्रवाल जी, नांगलोई, नई दिल्ली	200/–
श्रीमती शकुन्तला देवी, आर्य समाज बी–2 ब्लाक जनकपुरी	200/–
श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी, महामंत्री शुद्धि सभा, नई दिल्ली	200/–

राष्ट्रधर्मी प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे अभिनन्दन ग्रंथ लोकार्पण एवं गौरव समारंभ

रेणापूर ता.जि. लातूर के एक साधारण परिवार में स्व. रामस्वरूप और माता त्रिवेणीबाई के घर डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे जी का जन्म हुआ। आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर उत्तराखण्ड के एक सुयोग्य स्नातक है। आपने महा. आर्य प्रतिनिधि सभा में उपदेशक रहकर महाराष्ट्र आन्ध्र कनार्टक में आर्यसमाज की दुन्दुभि बजायी है। सम्प्रति "संस्कृति रक्षक मंच" के माध्यम से आप व्याख्यानों, लेखों तथा साहित्य से संपूर्ण हिंदू समाज को आन्दोलित कर रहे हैं। आपने हैदराबाद मुक्तिसंग्राम और आर्य समाज के आन्दोलन पर शोधपूर्ण ग्रंथ लिखकर मराठवाडा, आन्ध्र और कर्नाटक के आर्यो के योगदान को उसमें दर्शाया है। इस तरह देशहित में कार्य करते हुए उनके जीवन के 65 वर्ष पूर्ण हो चूके है। डॉ. लोखण्डे जी के कार्यों को दृष्टिपथ में रखते हुए उनके मित्र परिवार, स्नातक साथी और कुछ सस्थाओं नें उनका अभिनन्दन एवं गुण गौरव करना सुनिश्चित किया है। जिससे की उनके जीवन कार्योंपर प्रकाश डाला जा सके। इसी उपलक्ष्य में देश विदेश के विद्वान साहित्यकारों ने उनके

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-06-2014 Delhi Postal R.No. DL (N) 060/2012-14
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

जून – 2014

विनम्र अपील

सभी धर्म प्रेमी, राष्ट्रभक्त, हिन्दू जाति के समर्थक सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि पाकिस्तान से आये हुए हिन्दू शरणार्थी भाइयों, बहनों एवं बच्चों के लिए तन, मन, धन से सहयोग करें। पाकिस्तान में हिन्दुओं की जो दुर्दशा हो रही है, उसके कारण हिन्दुओं का प्रतिदिन पलायन हो रहा है। पाकिस्तान में हिन्दू बहू-बेटियों की इज्जत सरेआम लूटी जाती है। हिन्दुओं की सम्पत्ति जान-माल पूरी तरह असुरक्षित है। ऐसे संकट के समय में एक हिन्दू देश भक्त जाटबली श्री नाहर सिंह जी अपने 82 कमरों का मकान खाली करके लगभग 800 हिन्दुओं को आश्रय देकर उनकी पूणतया व्यवस्था कर रहे हैं। **ध्यान रहे ये वो हिन्दू हैं जिन्होंने पाकिस्तान छोड दिया किन्तु अपना सत्य सनातन हिन्दू धर्म को नहीं छोड़ा।**

अतः ऐसे धर्मनिष्ठ हिन्दुओं को अन्न (आटा, दाल, चावल, तेल, नमक आदि) वस्त्र, तथा अन्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें। आप अपना सहयोग निकटतम आर्य समाज में देकर वहाँ के प्रबन्धक जी को बता देवें। अभी और 150-200 लोग पाकिस्तान से आ रहे हैं। एक व्यक्ति लोन लेकर, ऋण लेकर इतना बड़ा यज्ञ कर रहा है, यदि हम सभी हिन्दू थोड़ा-थोड़ा भी सहयोग करेंगे तो आप स्वयं ही समझ सकते हैं उन हिन्दुओं के लिए कितना बड़ा सहारा बन जायेगा। हम यदि पाँच सितारा होटल में बैठकर चाय पीते हैं तो एक कप चाय की कीमत 150/- 200/- रु. होती है। तो क्या हम एक कप चाय के बराबर भी अपने भाइयों के लिए सहयोग नहीं कर सकते? सोचिये, विचारिये अन्न दान एवं अभय दान (किसी को सुरक्षित बना देना) से बड़ा कुछ भी नहीं हो सकता।

साक्षात् सहयोग के लिए निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं- श्री नाहर सिंह सुपुत्र स्व. श्री शीशराम, मकान नं. 13, नजदीक शिव मन्दिर अम्बेडकर कालोनी, बिजवासन, नई दिल्ली-110061, मो. 9968288057

-निवेदक : नरेन्द्र वलेचा
महामन्त्री शुद्धि सभा

लुधियाना

चौधरी नाहर सिंह ने पाकिस्तान से आए लोगों के लिए खाली करवा दिया अपने 82 कमरों का मकान

मुहिम पाक से आए हिन्दुओं को नागरिकता दिलाने की

▪ लुधियाना शिवसेना के प्रधान भी बने इस मुहिम का हिस्सा

संडे स्टोरी हाईकोर्ट में इनकी नागरिकता के लिए याचिका दायर की थी, राष्ट्रपति से भी लगाई गुहार

145 लोगों को ले गए अपने घर

छोड़ आई बेटा

रेहड़ी लगाकर कर रहे हैं गुजारा

मानवता की सेवा ही धर्म

आर्ष गुरुकुल देवतीर्थ के तृतीय वार्षिकोत्सव
1 जून 2014 से 22 जून 2014 तक
चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन

स्थान :- महाराजा अग्रसेन ग्लोबल स्कूल, लखबीराम पार्क, रोहिणी सै. 22 के सामने, नई दिल्ली-110085
समय : प्रातः 6.00 से 01.00 बजे सायं 4:00 से 8:00 बजे तक
आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।
सम्पर्क सूत्र : 9968059239, 9911974790, 9811464398

आर्य समाज मंदिर मस्जिद मोठ नई दिल्ली का निर्वाचन

प्रधान - श्री चतर सिंह नागर
मंत्री - श्री ओम प्रकाश सैनी
कोषाध्यक्ष - श्री देवेन्द्र कुमार

"तुम्हारे कर्म और फल"

जाने-अनजाने
जैसे भी बीज
धरा में।
फसल हुई
वृक्ष होने लगे
फल काटने की बारी है।
सब तुम्हारा ही किया हुआ है
अच्छा, बुरा, जहर, अमृत
क्यों, पसीने क्यों छूट रहे है।
भय, घबराहट, अपमान पीड़ा
रोग, ऋण, दरिद्रता, कैद, धाव
यही तो बोया था
अब भुगतो
बोते समय सोचना था
तब अच्छा लग रहा था
अब रोना आ रहा है
सारा संसार तुम पर हंस रहा है
नहीं तुमनें कर्म ही ऐसे किये
कि संसार को तुमने मौका दिया हंसने का।
ये सारे फल ये सारे वृक्ष ये सारी फसल
तुम्हारी ही है। तुम्हारी ही बोई हुई।
तुम्हारा अधिकार है काटना, खाना, चबाना, रखना।
क्या कहा? तुम्हारे इतने सारे बुरे कर्म नही थे
भूल गये प्रकृति एक का सौ देती है
अच्छा का सौ गुना
बुराई का भी सौ गुना
क्या कहा? इस भुगतने से अच्छा मरना।
मर भी न सकोगे भुगते बिना
चिन्ता मत करो एक भी अच्छा कर्म होगा
तो नरक की भीषण आग में
आ जायेगा देवदूत बनकर
वो भी तुम्हारा ही कर्म होगा
तकदीर का रोना व्यर्थ है
कायरों की भाषा से बात नहीं बनेगी
ये कर्म जन्म-जन्मान्तर तक पीछा नहीं छोड़गे।
हाँ ईश्वर है, भगवान है
लेकिन कर्म भी तुम्हारे
उसमें ईश्वर करे भी तो क्या?
अब रोकर काटो या प्रभु को भजकर
सहना तो होगा ही
सहायता कौन करेगा?
चाहकर भी न कर सकेगा कोई
तुम्हारा प्रारब्ध, तुम्हारा भाग्य
सिर्फ तुम बदल सकते हो।
अब शुरु करो बुबाई सत्कर्मों की
प्रेम, अहिंसा, करुणा, मानव सेवा
दीन दुखियों की सहायता आरंभ करो।
लात मारो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को
पाप से दूर रहो और सिर्फ पुण्य करो
श्रेष्ठ कर्म करो आचरण में सत्य लाओ
चरित्र को ऊँचा बनाओ।
अब की बोनी ऐसी कर लो
कि वर्तमान पाप की ताप भी कम हो
और भविष्य में केवल शीतलता हो कर्मो की।
डरो मत, उठो
त्याग कर सब मोह, लोभ
आज की तपन को सहो और सीखो
कैसे आभूषण बना जाता है
इन दुखो से, ठाकरों से, व्यथित मत हो
सीखो, समझो, सहो
और कर्म किये जाओ श्रेष्ठ से श्रेष्ठ
देखो फिर फसल लहलहायेगी
सुख की समृद्धि की, विकास की
ज्ञान भक्ति, मोक्ष की

-लेखक देवेन्द्र कुमार मिश्रा
छिन्दवाड़ा (म.प्र.) मो. 9425405022

मुद्रक, व प्रकाशक - रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री